बी०एड० III Semester

हिन्दी शिक्षण

पद्य शिक्षण–

साहित्य की विधाओं में कविता एक है जो मानव को परमानन्द पहुँचाती है जिससे दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। मानव जीवन दुःख और सुख का सागर है। सुख से दुःख का बाजू बलवत्तर है। ऐसे दुःख को भूलकर सुख प्राप्ति के लिए कविता एक जड़ी-बूटी है के समान है।

कविता शिक्षण के उद्देश्य–

कविता रागमय होती है, उसमें हमारे हृदय को स्पन्दित करने की शक्ति होती है। इसलिए इसके द्वारा बच्चों की बोध, कल्पना एवं अभिव्यक्ति शक्ति के विकास के साथ-साथ उन्हें भावानुभूति, आनन्दानुभूति करानी चाहिए। कविता शिक्षण से उच्च आदर्शों का पालन किया जाता है। जो एक जीवन का मूल्य है। कविता शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्न प्रकार हैं।–

1. छात्रों में कविता के प्रति अभिरुचि जाग्रत करना।
2. छात्रों को स्वर-प्रवाह तथा भावों के अनुसार कविता पाठ करने के योग्य बनाना।
3. छात्रों की कल्पना शक्ति का विकास करना।

4- छात्रों में सौन्दर्यानुभूति की भावना को जागृत करना और उस भावना को निरन्तर प्रौढ़ करना।
5- छात्रों के सात्विक भावनाओं का उद्बोधन करना।
6- उनकी रागात्मक प्रवृत्तियों का संशोधन करना।
7- छात्रों के उदात्त भावों का संवर्धन करना तथा उनके दूषित मनोभावों का परिष्कार करना।
8 छात्रों में काव्य-सौन्दर्य को परखने की क्षमता उत्पन्न करना।
9- उनके चरित्र का निर्माण करना।
10 उनमें कविता के भाव को हृदयंगम करने की शक्ति का विकास करना।
11 कवि की अनुभूतियों, आदर्शों एवं कल्पना को छात्रों तक पहुँचाने का प्रयत्न करना।
12 भावाभिव्यञ्जना एवं रसानुभूति द्वारा छात्र एवं कवि के मध्य में तादात्म्य उत्पन्न करना।
13 छात्रों को अलंकारों का ज्ञान देना।
14 छात्रों को कविता के गुण-दोषों के मूल्यांकन में कुशल बनाना।
15 उनको शब्द-योजना, शब्द-शक्तियों, छन्दों विधानों और विभिन्न रसों की अनुभूति एवं शास्त्रीय ज्ञान कराना।
16 उनकी सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

(17) छात्रों को काव्य - शैली का बोध कराते हुए उनकी प्रवृत्ति को काव्य - रचना की ओर मोड़ना।

काव्य-शिक्षण की विधियाँ

कविता के सफल एवं प्रभावोत्पादक शिक्षण के लिए अनेक विधियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं।

१. गीत प्रणाली (Song Method)
२. अभिनय प्रणाली (Acting Method)
३. अर्थ बोध प्रणाली (Meaning Method)
४. व्याख्या प्रणाली (Exposition Method)
५. व्यास प्रणाली (Discourse Method)
६. तुलना-प्रणाली (Comparative Method)
७. समीक्षा प्रणाली (Criticism Method)
८. खण्डान्वय प्रणाली (Analitical Method)

१. गीत प्रणाली —

प्रारम्भिक कक्षाओं में यह विधि बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण है। बच्चे जन्म से ही संगीतप्रिय होते हैं। इसी कारण बालगीत एवं छंदोबद्ध लय वाले गीत बच्चों को बहुत ही प्रभावित करते हैं। अध्यापक स्वयं स्वर ताल एवं लय के साथ पढ़ता है और बालक उसका अनुसरण करते हैं। बालकों द्वारा

Page :
Date : / /

समवेत सस्वर पाठ भी कराया जाता है।

उदाहरण –

बादल लेकर भानू आया।
ढम ढम ढम ढम ढम ढम ।।
ढोल बजाता मैढक आया।
टम टम टम टम टम टम ।।

गुण –

1. प्रारम्भिक कक्षा के बालकों के लिए उपयुक्त।
2. गीत के बोल एवं शब्द रचना अत्यन्त सरल
3. बालक आसानी से याद कर सकते हैं।
4. कला एवं गेय-पक्ष की प्रधानता होती है।

दोष –

1. उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त नहीं है।
2. बड़े छात्र ऐसे गीतों में अभिरुचि नहीं लेते।
3. शब्द-शक्ति, गुण एवं भावपक्ष को स्थान नहीं देता।
4. केवल शब्द-योजना रहती है, उच्चकोटि के अर्थ की योजना नहीं रहती।

25/04/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया